Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 5.146
Volume - 5, Issue - 12, December - 2022 Publication Date: 31/12/2022

DOIs:10.2018/SS/202212004 --:-- Research Article

गांधी जी के शैक्षिक विचार

डॉ. हरिभाई पटेल
सहायक प्राध्यापक, गांधी अध्ययन संकाय, गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद
ई-मेइल : hmpatelgvp@gmail.com

सारांश : शिक्षा मनुष्य को उसके जीवन के लक्ष्य तक ले जाने की एक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया द्वारा मनुष्य का शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास किया जा सकता है। ये तीनों स्तरों पर मनुष्य का विकास क्रमश एवं सतत होता रहता है। गांधी को शिक्षा ही समाज के निर्माण का एक मात्र साधन दिखाई देता था। इसलिए गांधी स्वयं एक सशक्त शिक्षा पद्धति व प्रक्रिया का निर्माण करने में जुटे थे।

गांधी को उनके शिक्षा के विचार और शिक्षा के प्रयोगों का समर्थन हक्सली के शिक्षा विचार से प्राप्त होता है। गांधी लिखते है की एक अंग्रेज विद्वान हक्सली ने शिक्षा के बारे में यह कहा है की, "उस आदमी ने सच्ची शिक्षा पाई है, जिसके शरीर को ऐसी आदत डाली गयी है की वह उसके बसमें रहता है, जिसका शरीर चैन से और आसानी से सौंपा हुआ काम करता है। उस आदमी ने सच्ची शिक्षा पाई है, जिसकी बुद्धि शुद्ध, शांत और न्यायदर्शी है। उसने सच्ची शिक्षा पाई है, जिसका मन कुदरत के क़ानूनों से भरा है और जिसकी इन्द्रियों उसके बसमें है, जिसके मन की भावनाएं बिलकुल शुद्ध है, जिसे नीच कामों से नफरत है और जो दूसरों को अपने जैसा मानता है। ऐसा आदमी ही सच्चा शिक्षित (तालीमशुदा) माना जायेगा, क्योंकि वह कुदरत के नियम के मुताबिक चलता है। कुदरत उसका अच्छा उपयोग करेगी और वह कुदरत का अच्छा उपयोग करेगा।

गांधी जी ने वास्तविक युगद्दष्टा के रूप में भारत की आनेवाली समस्याओं को पहचान लिया था। समान शिक्षा, समानता के लिए शिक्षा, सामाजिक समरसता, नैतिक और अध्यात्मिक उन्नयन के माध्यम से विद्यार्थी के सम्पूर्ण चरित्र और व्यक्तित्व विकास का लक्ष्य, हर पेट को रोटी और हर हाथ को काम, सबको व्यवसायिक कौशल सिखा कर आत्मनिर्भर नागरिक निर्माण से आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का प्रयास, हमारे भारत के इक्कीसवीं सदी के लक्ष्य हैं। इन सबकी प्रस्तावना गांधी जी की बुनियादी शिक्षा में है।

कुंजी शब्द : वर्धा शिक्षा योजना, नइ तालीम, शिक्षा में अनुबंध, शिक्षा में स्वावलंबन ।

1. प्रास्ताविक :

शिक्षा मनुष्य को उसके जीवन के लक्ष्य तक ले जाने की एक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया द्वारा मनुष्य का शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास किया जा सकता है। ये तीनों स्तरों पर मनुष्य का विकास क्रमश एवं सतत होता रहता है। देश व दुनिया के सामाजिक इतिहास से सिद्ध होता है की लोगों के जीवन लक्ष्य के आधार पर से ही ज्यादातर शिक्षा का विकास होता है। गांधी समझते थे की हिंदुस्तान की आत्मा को अंग्रेजी शासन में पूरी तरह से कुचला जा रहा है। अतः देश के लोगों को इसकी जानकारी देना और इससे बचने की मुहिम चलाना आवश्यक होगा। सिर्फ अंग्रेजों के चले जाने से ही देश का भला नहीं होगा या स्वतंत्रता नही आएगी। इससे पहले तो कुछ वैकल्पिक काम करने पड़ेंगे जो देश की मज़बूती को बनाये रखें। गांधी का यह सारा चिंतन उनकी पुस्तक हिन्द स्वराज से समझ में आता है। गांधी का उद्देश्य भारत से अंग्रेजों को निकालने का एक सीमित उद्देश्य नहीं था। उनका उद्देश्य तो भारत के माध्यम से ऐसी सभ्यता, संस्कृति, जीवन व्यवस्था का विकास करना था जो हर देश, काल व परिस्थिति में टिकने वाली हो। इस प्रकार एक अखंडित मानवीय सभ्यता के बारे में गांधी के पहले किसी और ने सोचा हो ऐसा इतिहास में कहीं देखने को शायद ही मिलता हो।

गांधी जीवन की हर व्यवस्था को उसके स्वाभाविक स्वरूप में उसके मूल्यों के साथ ज़िन्दा रखना चाहते थे, जो मनुष्य को अपने कर्तव्य और अधिकार को बरकरार रखते हुए उसके सत्व, अस्तित्व और सह-अस्तित्व को बनाये रख सकती हो। गांधी को शिक्षा ही समाज के निर्माण का एक मात्र साधन दिखाई देता था। इसलिए गांधी स्वयं एक सशक्त शिक्षा पद्धति व प्रक्रिया का निर्माण करने में जुटे थे।

2. गांधी के शिक्षा विचार एवम शिक्षा प्रयोगों का विकास :

गांधी को उनके शिक्षा के विचार और शिक्षा के प्रयोगों का समर्थन हक्सली के शिक्षा विचार से प्राप्त होता है। गांधी लिखते

है की एक अंग्रेज विद्वान हक्सली ने शिक्षा के बारे में यह कहा है की, "उस आदमी ने सच्ची शिक्षा पाई है, जिसके शरीर को ऐसी आदत डाली गयी है की वह उसके बसमें रहता है, जिसका शरीर चैन से और आसानी से सौंपा हुआ काम करता है। उस आदमी ने सच्ची शिक्षा पाई है, जिसकी बुद्धि शुद्ध, शांत और न्यायदर्शी है। उसने सच्ची शिक्षा पाई है, जिसका मन कुदरत के क़ानूनों से भरा है और जिसकी इन्द्रियों उसके बसमें है, जिसके मन की भावनाएं बिलकुल शुद्ध है, जिसे नीच कामों से नफरत है और जो दूसरों को अपने जैसा मानता है। ऐसा आदमी ही सच्चा शिक्षित (तालीमशुदा) माना जायेगा, क्योंकि वह कुदरत के नियम के मुताबिक चलता है। कुदरत उसका अच्छा उपयोग करेगी और वह कुदरत का अच्छा उपयोग करेगा। [1]

वर्ष 1904में गांधी ने दक्षिण आफ्रिका में भारतीयों के लिए एक साप्ताहिक अखबार 'इंडियन ओपिनियन' निकालना शुरु किया जिसमें गांधी शिक्षा के बारे में अपना विचारों भारतीय समाज के लिए लिखते थे। उनके विचार केवल वहां के लोगों के लिए नहीं बल्कि हिंदुस्तानियों के लिए भी थे। 'इंडियन ओपिनियन' के 16 दिसंबर 1904 के अंक में प्रो. गोखले को लिखे पत्र में गांधी लिखते है की, "देश में सच्ची जरुरत शिक्षा की है, शिक्षा का अर्थ ककहरा सीखकर बैठ जाना नहीं है। बल्कि यह जानना है की हमारे अधिकार क्या है? उस अधिकारों के साथ हमारा उत्तरदायित्व और कर्तव्य क्या है? इस प्रकार की शिक्षा करोड़ों लोगों में फैलानी होंगी, ये शिक्षा मात्रा चार-पांच लोगों को मिले उतना ही बस नहीं है। हमें तैयार होना होगा, उसके लिए हमें अपना समय देना होगा। सरकार इस प्रकार की शिक्षा देगी यह आशा नहीं रखनी है। [2]

1904 में गांधी ने द.आफ्रिका में फ़ीनिक्स आश्रम की स्थापना की और वहाँ सत्याग्रहियों के बच्चों के लिए सामूहिक शिक्षा के प्रयोग किये। रस्किन की पुस्तक 'अन टू धिस लास्ट' में लिखे विचारों से गांधी को अपने भीतर चल रहे विचारों को पूर्ण समर्थन प्राप्त हुआ। इसलिए उस पुस्तक को उन्होंने 'जादुई पुस्तक' कहा। 'अन टू धिस लास्ट' के विचार को मूर्त रूप देने के लिए गांधी ने 1911में अपने मित्र केलनबेक की मदद से प्राप्त 1100 एकड़ जमीन पर द.आफ्रिका में टॉलस्टॉय फ़ार्म की स्थापना की। यहाँ पर गांधी ने संपूर्ण शिक्षक और अभिभावक के रूप में बच्चों को शिक्षा देने लिए पाठशाला चलाई। टॉलस्टॉय फ़ार्म में इस पाठशाला में स्वावलंबी शिक्षा के स्वरूप को मूर्त रूप देने के लिए स्वावलंबन के प्रयोग किये गए। गांधी ने ये बात कही की, "यह स्कूल अभी एक प्रयोग के रूप में चलाया जा रहा है। इसलिए ऐसी आशा करना तो बहुत बड़ी बात होंगी की यहाँ के बालक बड़े होकर भी किसान ही बने रहेंगे और सादा जीवन ही बितायेंगे। फिर भी इतनी आशा तो रखी जा सकती है की वे इस समय जो कुछ सिख रहें है, जीवन संघर्ष में पड़कर भी उसके अनुसार कुछ न कुछ अवश्य करेंगे। [3]

1915में गांधी दक्षिण आफ्रिका से भारत लौटे और श्री रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा स्थापित विद्यालय 'शांतिनिकेतन' को देखने गए। शान्तिनिकेतन में स्वावलंबी शिक्षा पर गांधी ने गुरूदेव के साथ बातचीत की। गाँधी के विचार से गुरूदेव काफी प्रभावित हुए और उन्होंने इस विचार को स्वराज की कुंजी कहा। इसके बाद गांधी ने अहमदाबाद में कोचरब नामक गाँव में एक किराये के मकान में आश्रम बनाया। कोचरब आश्रम में बच्चों के लिए विद्यालय शुरू किया और टॉलस्टॉय फार्म में हो रहे सभी शैक्षणिक सिद्धांतों का प्रयोग शुरू किया। इसी दौरान गांधी राष्ट्रीय शिक्षा योजना की तैयारी में लगे थे। समाज व राष्ट्र की जरुरत को समझते हुए राष्ट्रीय शिक्षा पर लगातार विचार करके उसके स्वरूप को गठित करने लगे। राष्ट्रीय शिक्षा की योजना के साथ 1917में साबरमती आश्रम में ही राष्ट्रीय पाठशाला शुरू की।

9 अगष्ट,1920में असहयोग आन्दोलन का प्रारंभ किया। जिसमें पूरे देश से हजारों युवाओं, अध्यापक एवं आचार्य ने सरकार की स्कूल व कालिजों से कूच की और असहयोग आन्दोलन को पूरा बल दिया। इसी दौर में गांधी ने 18 अक्टूबर,1920 के दिन गूजरात विद्यापीठ की स्थापना की। जिसमें उन्होंने स्वयं कुलपति पद की ज़िम्मेदारी ली और आचार्य गिदवानी जी को आचार्य बनाया। गूजरात विद्यापीठ की स्थापना के दिन गांधी ने कहा की, "मैने ऐसे अनेक कार्य किये है जिसके लिए मैं मेरे मन में मगरुरी मानता हूँ। कई कार्यों के लिए पश्च्याताप भी है। आज में बिलकुल अतिशयोक्ति के बिना कहना चाहता हूँ की मैंने ऐसा एक भी कार्य नहीं किया जिसकी तुलना आज किये जाने वाले कार्य से हो। " गूजरात विद्यापीठ की स्थापना गांधी ने राष्ट्र निर्माण की दृष्टी से की थी। गांधी इसके द्वारा हिन्दुस्तान के स्वराज के लिए लोगों का चरित्र को गढ़ने का काम कर रहे थे। गूजरात विद्यापीठ द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा का काम आगे बढ़ने लगा और विद्यापीठ के छात्रों में स्वराज की भावना दृढ़ होने लगी। इसके बाद 1930में गूजरात विद्यापीठ के छात्र नमक सत्याग्रह में गांधी के साथ रहे। तब गांधी ने कहा की, " डॉ. मेहता के ढाई लाख और अन्य शुभ चिंतक ने विद्यापीठ के लिए जो रुपये खर्च किये है वे सभी आज ब्याज सहित वसूल हो गए....। [4]

राष्ट्रीय शिक्षा के कामों के साथ साथ गांधी अंग्रेजी सरकार को यह बता रहे थे की उनके आने के बाद से हमारी शिक्षा का स्तर गिरा है। 20 अक्टूबर, 1931में अंग्रेज़ी सरकार द्वारा आयोजित 'गोलमेज परिषद' में (Royal Institute of International affairs) नाम की संस्था में गांधीजी ने व्याख्यान देते हुए भारत का भविष्य पर बोलते हुए कहा की, "भारत में 50 या 100 वर्ष पूर्व जो निरक्षरता थी उससे अधिक निरक्षरता आज दिखाई देती है और अंग्रेज अधिकारी शिक्षा और संबंधित विषयों पर ध्यान देने के बजाय शिक्षा पद्धति को नष्ट भ्रष्ट कर रहे है, उन्होंने भारत की शिक्षा परंपरा के प्राण ले लिए है। हमारी शिक्षा पद्धति की जड़ें नीव से ही उखाड़ दी है। फलतः हमारा शिक्षा रूपी वृक्ष आज नष्ट हो रहा है। " [5]

इस तरह दक्षिण आफ्रिका से लेकर 1915में हिंदुस्तान वापसी के बाद गांधी जी शिक्षा के विकसित हो रहे उनके विचार व अनुभवों को साझा करते रहे और इतना ही नहीं शिक्षा के अपने प्रयोगों को भी आगे बढ़ाते रहे।

3. वर्धा शिक्षा योजना :

वर्ष 1937में वर्धा के मारवाड़ी शिक्षा मंडल की रजत जयंती के अवसर पर 22 एवं 23 अक्टूबर को नवभारत विद्यालय, वर्धा में अखिल भारतीय शिक्षा परिषद हुई। ईस परिषद् में गांधी जी को परिषद् की अध्यक्षता के लिए निवेदन किया गया। उस समय गांधी जी गूजरात विद्यापीठ के कुलपति थे। उन्होंने परिषद की अध्यक्षता की। ईस परिषद् में देशभर में से आयें हुए राष्ट्रीय विचारधारा के शिक्षा शास्त्रियों और कांग्रेस शासित प्रदेशों के शिक्षा मंत्रियों के सामने गांधी जी ने अपने शिक्षा सम्बधी विचार प्रस्तुत किये।

गांधी जी ने अपनी नयी तालीम के प्रस्ताव में मुख्य रूप से 4 बातें रक्खी। गांधी जी द्वारा प्रस्तुत रूपरेखा पर सम्मेलन में एकत्रित शिक्षा शास्त्रियों ने विस्तृत चर्चा के बाद निम्नानुसार प्रस्ताव पारित किये।[6]

1. इस सम्मेलन का मत है कि राष्ट्रव्यापी आधार पर सात वर्ष की अवधि की निःशुल्क एवम अनिवार्य शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए।
2. शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से दी जानी चाहिए।
3. इस पूरी अवधि में शिक्षा का केन्द्र किसी न किसी रूप में शारीरिक और उत्पादक कार्य होना चाहिए। बच्चे की इस तरह से होनी चाहिए कि बालकों का वातावरण को ध्यान में रखते हुए चुने गए मध्यवर्ती हाथ उद्योग के साथ लगाव रखते हुए सभी शक्तियों का विकास होना चाहिए या या शिक्षा देनी चाहिए।
4. परिषद को उम्मीद है कि शिक्षा की इस प्रणाली में से धीरे-धीरे शिक्षकों का वेतन निकलेगा।

परिषद के इस प्रस्ताव को समझकर उस पर काम करने के एवम अभ्यासक्रम बनाने के लिए डॉ. जाकिरहुसेन की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया। ये समिति को उस योजना के प्रत्येक पहलू को समझकर एक रूपरेखा तैयार करनी थी।

23 अप्रैल 1938 को सेगांव (सेवाग्राम) में 'हिन्दुस्तानी तालीमी संघ' की स्थापना हुई। इसके अध्यक्ष के रूप में डॉ. जाकिर हुसैन को नियुक्त किया गया। इस समिति में जो सदस्य नियुक्त किए गए वे इस प्रकार थे।

(1) डॉ. जाकिर हुसैन - अध्यक्ष
(2) श्री कृष्णदास जाजू - कोषाध्यक्ष
(3) श्री आर्यनायकम - मंत्री
(4) श्रीमती आशादेवी
(5) श्री अविनाशलिंगम
(6) श्री विनोबा भावे
(7) श्री काकासाहेब कालेलकर
(8) आचार्य कृपलानी
(9) श्री जे. सी. कुमारप्पा
(10) आचार्य नरेंद्र देव
(11) श्री नरहरि परिख
(12) श्री रामचंद्रन
(13) श्री ख्वाजा गुलाम सैय्यफुद्दीन

इस समिति के साथ एक सलाहकार बोर्ड नियुक्त किया गया था। इसके सदस्य इस प्रकार थे। (1) रवींद्रनाथ टैगोर (2) मदनमोहन मालवीयजी (3) बाबू राजेंद्र प्रसाद
(4) प्रफुल्लचंद्र राय (5) प्रो. कर्वे (6) मौलाना आजाद (7) राजाजी (8) सरोजिनी नायडू
इस समिति ने वर्धा परिषद से उत्पन्न सभी शैक्षिक मुद्दों की जांच की और 2 दिसंबर 1937 को गांधीजी को एक रिपोर्ट प्रस्तुत की।

1938 में एक वर्ष के बाद अप्रैल में सूरत जिले के हरिपुरा में कांग्रेस ने इसको राष्ट्रीय शिक्षा योजना के रूप में स्वीकार किया। इस को कार्यान्वित करने हेतु सेवाग्राम में 'हिन्दुस्तानी तालीमी संघ' नामक अखिल भारतीय केलवणी संस्था की स्थापना की गई। 'हिन्दुस्तानी तालीमी संघ' सेवाग्राम ने ईस विचार को विद्यालय में प्रयोग के तौर पर प्रारम्भ करने की ज़िम्मेदारी ली। ये शिक्षा योजना के प्रति बहुत उत्साह प्रकट हुआ और सरकार ने तथा निजी लोगों ने अनेक बुनियादी तालीम स्कूल शुरू किये। इस तरह 1938 में गांधी जी द्वारा प्रस्तावित शिक्षा की योजना को 'नयी तालीम', वर्धा शिक्षा योजना', बुनियादी शिक्षा, खरी केलवणी, पाया नी केलवणी, Basic Education आदि नामों से भी जाना गया। नई तालीम के माध्यम से गांधी जी ने एक नए समाज के निर्माण का एक जीवंत सपना देखा था। गांधीजी ने संसार को बहुत अमूल्य चीजें दी है, किन्तु 1937में वह स्वयं कहते है की, "नयी तालीम मेरी अंतिम वसीयत है। यह सब रचनात्मक कार्यक्रमों को व्यावहारिक रूप देने की कुंजी है।" इससे पता चलता है की गांधी जी को ईस विचार पर कितना भरोसा था और आशा थी की इससे उनकी कल्पना का हिंदुस्तान बन पायेगा। उनके ईस शिक्षा सिद्धांत की प्रक्रिया में मनुष्य जीवन के हर आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, नैतिक आयाम एवं मनुष्य के जीवन के तीनों पक्ष शारीरिक, मानसिक व आत्मिक विकास की पूरी सम्भावना निहित थी। इसलिए गांधी जी नयी तालीम को मूल्यवान भेंट मानते थे।

4. वर्धा शिक्षा योजना में नइ तालीम के प्रमुख तत्व :

22-23 अक्टूबर, 1937 को वर्धा में आयोजित अखिल भारतीय शिक्षा परिषद में गांधी जी की शैक्षिक सोच पर विस्तार से चर्चा हुई

और सर्वसम्मति से चार प्रस्ताव पारित किए गए। ये चार प्रस्तावों को बुनियादी शिक्षा के आधार के रूप में मूल्यांकन करते हैं तो उसमे से बुनियादी शिक्षा के निम्नलिखित पांच तत्व या सिद्धांत निकाल सकते है।

1. 7 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए निःशुल्क, अनिवार्य एवम सार्वभौमिक शिक्षा
2. मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा
3. उद्योग द्वारा शिक्षा
4. शिक्षा में अनुबंध
5. शिक्षा में स्वावलंबन

निःशुल्क, अनिवार्य एवम सार्वभौमिक शिक्षा (7 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए) :

इस सिद्धांत का हर एक शब्द अर्थपूर्ण है। हमारा भारत देश कृषि प्रधान देश है। इस देश के सभी लोग कृषि उद्योग के साथ जुड़े हुए है। ज्यादातर लोग गरीबी रेखा गरीब और अनपढ़ है। इसलिए 'नि:शुल्क' शिक्षा देनी चाहिए। 'अनिवार्य' इसलिए क्योंकि हमारा देश दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। लोकतंत्र में सभी को शिक्षा पाने का अधिकार है। और 'सार्वभौम' ताकि इस देश में जन्म लेने वाले हर बच्चे को अमीर-गरीब, ऊँच-नीच, स्त्री-पुरुष जैसे भेदभाव के बिना शिक्षित होने का समान अवसर मिलना चाहिए। गांधी जी की इस 'बुनियादी शिक्षा' सात साल की होने पर भी माध्यमिक स्तर जीतनी होनी चाहिए। यदि हम इसके लिए एक समीकरण रखना चाहते हैं, तो मेट्रिक - अंग्रेजी + उद्योग = सात साल की नि:शुल्क, अनिवार्य और सार्वभौमिक शिक्षा। गांधी जी शिक्षा को एक अविभाज्य और संपूर्ण प्रक्रिया के रूप में मानते थे। किन्तु देश की परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए उन्हों ने अपना लक्ष्य सात से चौद साल के बालकों की शिक्षा पर केन्द्रित किया।

मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा :

जब गांधी जी ने अपनी शिक्षा योजना राष्ट्र के सामने प्रस्तुत की, तब भारत में अंग्रेजों का राज था और शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी था। फलतः बच्चे अंग्रेजी भाषा और विषय की भाषा के दोहरे बोझ से पीड़ित थे। इसके अलावा, आबादी का एक बहुत छोटा हिस्सा अंग्रेजी भाषा के माध्यम से मैट्रिक तक और फिर उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम था। इसलिए अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करनेवाला शिक्षित 'बाबू' वर्ग धीरे धीरे अपनी मातृभाषा, अपने देश के इतिहास और अपने देश की संस्कृति के प्रति घृणा और अनादर करने लगा था। गांधी जी ने इस दूषण के जहर को पहचाना और स्पष्ट किया कि 7 से 14 साल के बच्चों की शिक्षा "मातृभाषा" के माध्यम से ही दी जानी चाहिए। इस प्रकार, मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा बुनियादी शिक्षा योजना का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत बन गया।

मातृभाषा में उचित शिक्षा ही सभी शिक्षा का आधार है। प्रभावी ढंग से बोलने और स्पष्ट रूप से पढ़ने-लिखने की शक्ति के बिना, कोई भी व्यक्ति किसी भी विचार की सही ढंग से कल्पना नहीं कर सकता है और किसी विशेष भाषा में खुद को व्यक्त नहीं कर सकता है। साथ ही मातृभाषा बच्चे को अपने लोगों के विचारों, भावनाओं और समृद्ध विरासत से परिचित कराने का एक साधन है। मातृभाषा बच्चे की कलात्मक अभिरुचि और सौंदर्य की प्रशंसा को व्यक्त करने का एक प्राकृतिक माध्यम है। [7]

उद्योग द्वारा शिक्षा :

बालक का स्वभाव सक्रिय होता है। केवल 'शब्द' के माध्यम से नहीं बल्कि 'क्रिया' के माध्यम से शिक्षा विकासशील देशों में शिक्षा का एक स्वीकृत सिद्धांत है। लेकिन बच्चा केवल सृजन का आनंद लेकर साथ ही 'क्रिया' के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करे इसके सामने गांधीजी का नैतिक विरोध था।

गांधी जी मानते थे की शिक्षा किसी उद्योग या उत्पादक कार्य के माध्यम से दी जानी चाहिए। वह उद्योग या उत्पादक कार्य स्कूल में दी जाने वाली दूसरी शिक्षा का केंद्र बनाना चाहिए। ज़ाकिरहुसेन समिति के अनुसार, "आधुनिक शैक्षिक विचार लगभग सर्वसम्मति से बच्चों को कुछ उपयोगी कार्यों के माध्यम से शिक्षित करने के विचार की सिफारिश करता है जो कि सार्थक है। इसे बच्चों को समग्र शिक्षा प्रदान करने की सबसे प्रभावी विधि के रूप में लिखा गया है।"[8]

इसलिए पसंद किया गया हाथ उद्योग या उत्पादक कार्य ऐसा होना चाहिए जिसमें प्रशिक्षण के लिए पर्याप्त गुंजाइश हो। उत्पादक कार्य का महत्वपूर्ण मानवीय गतिविधियों और हितों के साथ एक प्राकृतिक संबंध होना चाहिए, और उत्पादक कार्य ऐसा होना चाहिए जो पूरे शालेय अभ्यासक्रम तक विस्तारित हो सके। शिक्षा की इस नई योजना का मुख्य उद्देश्य ऐसे कारीगर तैयार करना नहीं है जो किसी भी उद्योग का मशीनीकरण कर सकें, बल्कि औद्योगिक कार्यों में प्रशिक्षण की गुंजाइश का लाभ उठाना है। यानी उत्पादक कार्य स्कूल के पाठ्यक्रम, इसका उद्योग विभाग का केवल एक हिस्सा नहीं होना चाहिए, बल्कि अन्य विषयों को शिखाने की शिक्षा पद्धति इसमें से प्रगट होनी चाहिए। बच्चों को समूहों में सहयोगात्मक रूप से काम करना, योजना बनाना, सटीकता बनाए रखना, नवाचार करना, और व्यक्तिगत जिम्मेदारी को समझना उन गुणों को सिखाना है यह बात पर जोर दिया जाना चाहिए।

इस प्रकार पसंद किया गया उद्योग कार्य दक्षता और व्यावसायिक परिणामों को नजर समक्ष रखकर व्यवस्थित और शास्त्रीय रूप से सीखना है। उद्योग केवल बौद्धिक या आर्थिक आत्मनिर्भरता के साधन के रूप में नहीं पढ़ाया जाना चाहिए।

गांधीजी का उद्योग द्वारा शिक्षा का मतलब था,

1. बच्चा सृजन का आनंद उठाएगा।

2. विभिन्न साक्षर विषयों को उद्योग को केंद्र में रखकर पढ़ाया जाएगा।
3. उद्योग द्वारा जो उत्पादन किया जाएगा वह भोजन, वस्त्र और आवास की छात्र और आसपास के समाज की बुनियादी जरूरतों को पूरा करे ऐसा होगा। गांधीजी ने इस प्रक्रिया को रचनात्मक होने के साथ-साथ उत्पादक भी बनाया। जिस क्षण से कोई बच्चा शिक्षा लेता है उसी क्षण से उत्पादक उद्योग की किसी न किसी प्रक्रिया सीखता है, वह इस क्षेत्र में उसका प्रमुख योगदान है। इस मुद्दे को सिद्धांत रूप में 'उद्योग द्वारा शिक्षा' कहा जाता है।

शिक्षा में अनुबंध :

बुनियादी शिक्षा 'जीवन द्वारा जीवन के लिए जीवन शिक्षा' है। बच्चे के जीवन विकास में 1. प्राकृतिक 2. सामाजिक और 3. औद्योगिक वातावरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं| बच्चे के जीवन को आकार देने की प्रक्रिया प्रकृति, समाज और उद्योग ये तीन केंद्रों से जुडी हुई हैं। इन तीनों केंद्रों को ध्यान में रखकर रचनात्मक गतिविधियों का संचालन करके बौद्धिक विषयों को पढ़ाने वाली शिक्षा को 'अनुबंध शिक्षा' कहा जाता है। बुनियादी शिक्षा का मौलिक तत्व अनुबंध है। अनुबंध शिक्षा प्रणाली में ज्ञान और कर्म के विभिन्न सम्बन्ध पर जोर दिया जाता है। हरबर्ट ने इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया, कि जब तक नए पाठ को पूर्व-ज्ञान के साथ न जोड़ा जाए, तब तक नया पाठ पूर्ण-रूप से हृदयगम्य नहीं हो सकता। ईस तरह नई तालीम में भी अनुबंध पद्धति का शिक्षा में उपयोग किया जाता है। अनुबंध पद्धति शिक्षण और जीवन की प्रक्रिया को अलग अलग नहीं मानकर एक अखंडरूप में जीना सिखाती है। इसलिए गाँधी जी ने शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति का प्रकृति तथा परमात्मा के साथ अनुबंध स्थापित करने का प्रयास किया। इस प्रकार की शिक्षा में व्यक्ति का सीधा संबंध व्यक्तिगत, सामाजिक, प्राकृतिक और आध्यात्मिक जीवन से होता है। अतः शिक्षा समग्र जीवन का रूप ले लेती है। अनुबंध पद्धति में ज्ञान-कर्म का आपस में मेल स्थापित किया जाता है।

शिक्षा में स्वावलंबन :

गांधी जी यथार्थवादी थे। जब एक नए प्रकार की शिक्षा के साथ प्रयोग करने की बात आती है, तो यह अनिवार्य है कि शिक्षक प्रयोग को गंभीरता से और ईमानदारी से समजे। गांधी जी को डर था कि अगर शिक्षक उद्योग को एक क्षणिक आनंद की गतिविधि के रूप में लेंगे तो यह उत्पादन के बजाय समय की बर्बादी होगी। इसीलिए उन्होंने शुरू में ही कहा, "स्वावलंबन बुनियादी शिक्षा की एक अग्लीय परीक्षा है।" इस प्रकार बुनियादी शिक्षा के सिद्धांतों में शिक्षा में स्वावलंबन को शामिल किया गया है। उन्होंने सोचा था कि इससे प्रत्येक विद्यालय अपने खर्च के लिए योग्य संसाधन जुटा पाएगा। स्वावलंबी शिक्षा का उद्योग केन्द्रित शिक्षा से गहरा संबंध है। स्वावलंबी शिक्षा में आत्मनिर्भरता पर बल दिया गया है- अर्थात् इसमें आर्थिक स्वावलंबन के साथ-साथ सामाजिक, धार्मिक, नैतिक आदि सभी प्रकार का स्वावलंबन होना चाहिए। भारत में शिक्षा को स्वावलंबी बनाने की दिशा में उन्होंने 3H की अवधारणा प्रस्तुत की, गांधी जी का मानना था कि बच्चों को हार्ट, हैण्ड और हेड (भावात्मक, गत्यात्मक और बौद्धिक) की शिक्षा दी जानी चाहिए। देश को मजबूत और आत्मनिर्भर बनाने में शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधन हैं उसकी मदद से हम देश को स्वावलम्बी बना सकते हैं। गांधीजी ने शिक्षा को अपने शब्दों में परिभाषित करते हुए कहा कि, शिक्षा से मेरा अर्थ मानव या बालक के शरीर, आत्मा और मन मस्तिष्क का सर्वांगीण विकास है। वे बालक के शारीरिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक और मानसिक विकास का आधार शिक्षा को मानते थे। संक्षेप में, गांधीजी का शिक्षा दर्शन बच्चे के समग्र विकास के लिए एक समग्र दृष्टि है।

5. वर्धा शिक्षा योजना में नइ तालीम के सहायक तत्व :

1. व्यक्तिगत स्वास्थ्य और सामाजिक स्वास्थ्य की शिक्षा
2. राष्ट्रभाषा हिंदी की शिक्षा
3. सह-शिक्षा (लड़कों और लड़कियों की सह-शिक्षा)
4. चरित्र निर्माण की शिक्षा
5. छात्रावास के साथ शिक्षा (सामुदायिक जीवन जीने के प्रशिक्षण हेतु शिक्षा)

इन पांच सहायक सिद्धांतों को बुनियादी शिक्षा के सहायक तत्व भी कह सकते हैं।

6. बुनियादी शिक्षा की अवधारणा :

1. पुरानी प्रथागत शिक्षा में किसी मूलभूत आवश्यकता पर विचार नहीं किया गया है। इसीलिए इस शिक्षा योजना को बुनियादी शिक्षा, नई तालीम, वर्धा शिक्षा योजना, खरी केलवणी, बेसिक शिक्षा के नाम से जाना जाता है।
2. पुरानी या प्रचलित शिक्षा जीवनोपयोगी या सामाजिक रूप से उपयोगी शिक्षा नहीं है, इसलिए गांधीजी द्वारा सूचित इस शिक्षा योजना को सच्ची शिक्षा भी कहा जाता है।
3. पुरानी शिक्षा प्रणाली में निरंतरता और जड़ता थी जबकि इस शिक्षा योजना प्रयोगशील, नूतन और गतिशील है इसलिए इसे नई तालीम कही जाती है।
4. बुनियादी शिक्षा का अर्थ केवल साक्षरता ही नहीं बल्कि शरीर, मन और आत्मा का संतुलित विकास भीहै।
5. बुनियादी शिक्षा का अर्थ है जीवन के लिए, जीवन के माध्यम से और जीवन के लिए शिक्षा है।

6. बेसिक शिक्षा का अर्थ केवल सातवीं कक्षा तक की शिक्षा प्रणाली ही नहीं बल्कि गर्भाधान से लेकर मृत्यु तक की शिक्षा प्रणाली भी है।
7. बुनियादी शिक्षा का अर्थ है सामाजिक रूप से उत्पादक श्रम कार्य के माध्यम से पूरी आबादी को श्रम, संस्कृति और सहयोग की ओर ले जाने के लिए शिक्षित करने की योजना है।
8. उद्योग, स्वच्छता, सामुदायिक जीवन और समवायी ज्ञान के संयोजन के साथ एक शिक्षा योजना बुनियादी शिक्षा है।
9. बेसिक शिक्षा जो सिर्फ 3R (पढ़ना, गिनना और लिखना) के बजाय 4H (हाथ, सिर, दिल और स्वास्थ्य) का उपयोग करना सिखाती है।
10. बुनियादी शिक्षा वह शिक्षा है, जो बच्चे के शरीर, मन और आत्मा के सर्वोत्तम हिस्सों को बाहर ला सकती है और उन्हें समग्र रूप से विकसित कर सकती है।

7. नई तालीम की शिक्षा पद्धति (Method of Teaching)

गांधी जी की शिक्षण-विधि निम्नलिखित सिद्धान्तों पर आधारित है- (i) करके सीखना। (ii) अनुभव द्वारा सीखना। (iii) सीखने की प्रक्रिया में समन्वय।
गांधी जी चाहते थे कि बालकों को वास्तविक परिस्थितियों में सिखाया जाये। इसके लिये वे किसी हस्त-कौशल अथवा उद्योग कार्य, प्राकृतिक पर्यावरण या सामाजिक पर्यावरण को शिक्षा का केन्द्र बनाने तथा समस्त ज्ञान व क्रियाओं को उनके माध्यम से विकसित करने पर विशेष बल देते थे।

8. नई तालीम में शिक्षक का स्थान (Place of Teacher in Basic Education)

गांधी के अनुसार, एक शिक्षक, आदर्श शिक्षक तभी बन सकता है जब वह शिक्षण कार्य को व्यवसाय के रूप में नहीं, बल्कि सेवा कार्य के रूप में स्वीकार करे। नई तालीम का शिक्षक सत्य का आचरण करने वाला, सहिष्णु, ज्ञान का भण्डार एवं धैर्यवान होना चाहिए। नई तालीम में बालक को उसकी रुचि के अनुसार सामाजिक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर क्रिया करके सीखने पर बल दिया जाता है। गांधी जी का शिक्षा दर्शन आदर्शवाद, प्रयोजनवाद तथा प्रकृतिवाद तीनों से ही प्रभावित है। शिक्षा के अर्थ पर यदि ध्यान दिया जाए तो गांधी जी के अनुसार, "शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा के सर्वोत्कृष्ट विकास से है।" इसलिए नई तालीम का शिक्षक श्रम, संस्कृति और सहयोग की ओर ले जाने वाला तथा उद्योग, स्वच्छता, सामुदायिक जीवन और समवायी ज्ञान के संयोजन करके शिक्षा प्रदान करने वाला होना चाहिए।

9. निष्कर्ष :

विश्व के सबसे बुद्धिमान व्यक्ति माने जाने वाले महान वैज्ञानिक अलबर्ट आइंस्टीन ने महात्मा गांधी की शिक्षा के बारे में कहा की, शिक्षा में आमूल परिवर्तन के उद्देश्य को लेकर गांधी जी ने आधुनिक भारत के लिए 'वर्धा शिक्षा योजना' प्रस्तुत की थी, जिसे बोलचाल की भाषा में बुनियादी शिक्षा भी कहा जाता है। अगर इसे आधुनिक युग में भारत की राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का पहला ब्लू प्रिंट कहा जाये तो गलत नहीं होगा। वास्तव में एक बुद्धिजीवी विचारक के रूप में उनका अनुभव था कि ब्रिटिश प्रणाली भारत की सामाजिक-आर्थिक सरंचना के अनुरूप नहीं है। क्योंकि ब्रिटिश अथवा पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली न केवल रोजगार की दृष्टि से भारत की विशाल जनसंख्या के अनुकूल नहीं थी, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भारतीयों को भारत से अलग कर उन्हें काले अंग्रेजों में परिवर्तित कर रही थी। ऐसे वातावरण में सन 1937 में गांधीजी ने वर्धा में हो रहे 'अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन' जिसे 'वर्धा शिक्षा सम्मेलन' कहा गया था, उसमें अपनी बेसिक शिक्षा की नयी योजना को प्रस्तुत किया।

बुनियादी शिक्षा का सिद्धांत भारत जैसे विकासशील देश में शिक्षार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने के साथ-साथ कुछ धनोपार्जन का भी उद्देश्य रखता है। एक युगदृष्टा शिक्षाविद के रूप में गांधी जी ने भारत की जनसंख्या की तात्कालिक और भविष्य की स्थिति को समझा और उसे अनुरूप शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थी को व्यावसायिक कौशल सिखाने का विचार प्रस्तुत किया। गांधी जी भली भांति इस बात से परिचित थे कि प्रत्येक हाथ को काम और प्रत्येक पेट को अन्न तभी मिल सकता है जब सब लोग किसी न किसी कौशल को विकसित करके काम करेंगे। उनका विचार था कि शिक्षा बालकों के जीवन, घर, ग्राम, लघु कुटीर उद्योगों, हस्तशिल्पों और व्यवसाय से एकाकार हो। हर बच्चे को आत्मनिर्भर बनना हमारा उद्देश्य नहीं, बल्कि कर्तव्य है। यह दृष्टि गांधी जी की बुनियादी शिक्षा का महत्वपूर्ण तत्त्व है। प्रत्येक विद्यार्थी कल का नागरिक है, उसे दूसरों पर या सरकार पर आश्रित होने की बजाये आत्मनिर्भर होना चाहिए।

'श्रम में शर्म नहीं' तथा प्रत्येक श्रम का सामजिक सम्मान भी गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा में निहित एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष है। बुनियादी शिक्षा में प्रत्येक विद्यार्थी के लिए शारीरिक श्रम अनिवार्य था, ताकि विद्यार्थी श्रमवान बने, स्वस्थ रहे और समाज के श्रमिक वर्ग का पर्याप्त सम्मान करना भी सीखें। मातृभाषा में शिक्षा उनकी बुनियादी शिक्षा का अभिन्न अंग है। मातृभाषा किसी देश के मूल्यों और संस्कारों की वाहक होती है। गांधी जी इस बात को अच्छी तरह समझते थे कि मातृभाषा से विद्यार्थी न केवल बढ़िया तरीके से समझ पायेगा बल्कि मातृभाषा में निहित सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्य भी विद्यार्थी जीवन का अभिन्न भाग बन जायेंगे।

बुनियादी शिक्षा के पाठ्क्रम को गांधी जी ने प्रत्येक समुदाय की आवश्यकताओं के आधार पर निर्मित किया। स्थानीय

परिस्थितियों, अपेक्षाओं और आवश्यकताओं के आधार पर शिक्षा में स्थानीय तत्वों को सम्मिलित किये जाने पर उन्होंने बल दिया। बुनियादी शिक्षा के पाठ्यक्रम में उन्होंने स्थानीय आवश्यकतानुसार आधारभूत शिल्प जैसे- खादी, कताई-बुनाई, कृषि कार्य, लकड़ी के काम, मिट्टी का काम, मछली पालन, फल व सब्जी की बागवानी, गृहविज्ञान आदि का प्रावधान किया। गांधी जी शिक्षा के उद्देश्य में विद्यार्थी के नैतिक और आध्यात्मिक विकास को शामिल करते हैं।

इस प्रकार गांधी जी ने वास्तविक युगद्दष्टा के रूप में भारत की आनेवाली समस्याओं को पहचान लिया था। समान शिक्षा, समानता के लिए शिक्षा, सामाजिक समरसता, नैतिक और अध्यात्मिक उन्नयन के माध्यम से विद्यार्थी के सम्पूर्ण चरित्र और व्यक्तित्व विकास का लक्ष्य, हर पेट को रोटी और हर हाथ को काम, सबको व्यवसायिक कौशल सिखा कर आत्मनिर्भर नागरिक निर्माण से आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का प्रयास, हमारे भारत के इक्कीसवीं सदी के लक्ष्य हैं। इन सबकी प्रस्तावना गांधी जी की बुनियादी शिक्षा में है।

सन्दर्भ :

1. गांधी, मो.क., 2015, हिन्द स्वराज (पुनर्मुद्रित), नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद, पृ. 107
2. मिश्र, शिवदत्त, 2006, समग्र नयी तालीम विचार दर्शन योजना एवम पाठ्यक्रम, नयी तालीम समिति आश्रम सेवाग्राम गाँधी स्मृति एवम दर्शन समिति, राजघाट, नयी दिल्ली, पृ. 35
3. उपरोक्त, पृ. 63, 65
4. पटेल, मगनभाई जो., 2007,गांधीजी नु शिक्षणदर्शन, नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद, (गुजराती) पृ. 80
5. धर्मपाल, 2007, रमणीय वृक्ष 18वीं शताब्दी में भारतीय शिक्षा साधना, अहमदाबाद पुनरुत्थान ट्रष्ट, अहमदाबाद, पृ. 58
6. पटेल, मणिभाई शिवाभाई, 1996, महात्मा गांधी नी केलवणी नी फ़िलासूफी, नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद,(गुजराती) पृ. 124-125
7. उपरोक्त, पृ. 130
8. उपरोक्त, पृ. 127-128

संदर्भ ग्रन्थ :

1. नारायण, डॉ. इकबाल, “आधुनिक राजनीतिक विचारधाराएँ”, ग्रन्थ विकास, जयपुर, 2005
2. बहरवाल, मनोज कुमार, “भारतीय राजनीतिक चिन्तक”, हिमांशु पब्लिकेशन, उदयपुर, 2014,
3. धवन जी.एन., “द पॉलिटिकल फिलॉसफी ऑफ महात्मा गांधी”
4. मेहंदीरत्ता, कुलदीप, 2020, गांधी जी की बुनियादी शिक्षा की वर्तमान में प्रासंगिकता, राष्ट्रीय शिक्षा, 2 अक्टूबर, 2020